
सोचतंत्र

दमिग बंद है



(सोचतंत्र) | (दमिग बंद है)

01 , 4:19

अपना काम बनता, तो एमसी जनता

02 4:50

बंदर को दी हल्दी

03 5:00

सब जूजानी है

04 3:40

रील बना ले

05 3:52

सेटगि है भाई

06 4:05

फॉरवर्ड कर दे

07 , 3:54

डगिरी है, दमिग नहीं

08 , 3:58

भक्त भी, हेटर भी

09 5:13

सब चंगा सी

10 5:15

घंटा ज्ञान

बोलना चालू है, सोचना बंद है।

01 ,

अपना काम बनता, तो एमसी जनता / 4:19

देश बदल रहा है, भाई...
सबको चाहिए रविल्यूशन...
लेकनि पहले अपना कमीशन!
हा हा हा!
एक ही मंत्र है इस देश का...
अपना काम बनता...

तो जनता!

अपना काम बनता!

तो जनता!

जेब में नोट, जुबान पे ज्ञान,
चेहरे पे सबके नकली ईमान!

अपना काम बनता!

तो जनता!

देश गया भाड़ में, कुरसी है प्यारी,
अपनी जेब भरने की पूरी तैयारी!

अपना काम बनता!

तो जनता!

नेता बोले जनता की सेवा,
कुरसी मली तो खाने लगे मेवा!
मंदिर की बातें, मस्जिद का शोर,

पीछे से चलता पैसों का ज़ोर!
भाषण में ग़रीब, बंगले में राजा,
चुनाव के बाद सबका बैड बाज़ा!
सड़कों पे गड्ढे, अस्पताल खाली,
फ़ोटो में चमके नेता की थाली!
फ़ाइल अटकी, बाबू मुस्काए,
मेज़ के नीचे हाथ बढ़ाए!
कल तक जो माँगे सबसे उधारी,
आज वहीं जनता पे झाड़ें अफ़सरी!

सबको है जल्दी!
सबको है पैसा!
सच का क्या करना?
जब झूठ है ऐसा!
शर्म गई तेल लेने!
ईमान गया बकिने!
अपना काम नकिलते ही,
लगे सबको ठेंगा दिखाने!

अपना काम बनता!

तो जनता!

जेब में नोट, जुबान पे ज़्ज़ान,
चेहरे पे सबके नकली ईमान!

अपना काम बनता!

तो जनता!

देश गया भाड़ में, कुरसी है प्यारी,

अपनी जेब भरने की पूरी तैयारी!

अपना काम बनता!

तो जनता!

सग्निल था लाल, पर गाड़ी भगाई,
पकड़े गए तो नोट की पर्ची थमाई!
लाइन में लगना? अरे पागल है क्या?
चाचा है अंदर, सेटगि है भैया!
टैक्स पे भाषण, कैश में कमाई,
बलि माँगो तो आँख दिखाई!
फ़ेसबुक पे देशभक्तिका नारा,
सड़क पे कचरा फेंका दोबारा!
बेटी बचाओ, स्टेटस लगाओ,
घर की औरत को चुप कराओ!
रश्मि को सब गाली देते,
अपना काम हो तो पैसे देते!
सबको चाहिए ईमानदार नेता,
खुद का जुगाड़ कोई नहीं छोड़ता!

भाई...

समस्या सिर्फ़ नेता नहीं है।
समस्या सिर्फ़ सिस्टम नहीं है।
समस्या वो सोच है...
जो हर गली में मिलती है।
हर दफ़्तर में मिलती है।
हर घर में मिलती है।

और जब कोई पूछे...
देश का क्या होगा?
जवाब एक ही आता है...
अपना काम बनता...
तो जनता!!!

सबको है हक्, पर फ़र्ज़ नहीं,
बाते हैं बड़ी, पर शर्म नहीं!
खुद की गलती पे पर्दा डालो,
दूसरे की गलती पे वीडियो बना लो!
धर्म का ठेका, जात का धंधा,
हर कोई लेकर घूमे एजेडा!
मीडिया बकिता, हेडलाइन चलि़लाता,
सच बेचारा कोने में जाता!
डिग्री की कीमत, नौकरी का रेट,
काबलि खड़ा है बंद गेट!
बच्चे का भविष्य, बाप का लोन,
नेता का बेटा वदिश में मौज!
देश को लूट के देशभक्त बनते,
झंडा उठाकर धंधे हैं करते!
ना लेफ्ट का सच, ना राइट का धंधा,
सबसे बड़ा रोग है अपना एजेडा!

अपना काम बनता!

तो जनता!

अपना काम बनता!

तो जनता!

ना शर्म, ना धरम,
बस पैसों का करम!
ना इंसाफ़, ना सच,
बस अपना ही स्वार्थ!

अपना काम बनता!

तो जनता!

कसिका काम?
अपना काम!
कसिका फ़ायदा?
अपना फ़ायदा!
जनता का क्या?
जनता!!!

अपना काम बनता!

तो जनता!

अपना काम बनता!

तो जनता!

और फरि हम पूछते हैं...
देश बदलता क्यों नहीं?
क्योंकि देश बदलने से पहले...
अपनी सोच बदलनी पड़ती है।
लेकनि सोच वही पुरानी...
अपना काम बनता...

तो जनता!

02

बंदर को दी हल्दी / 4:50

सुना था हल्दी बड़ी काम की चीज़ है...

दवा भी है...

मसाला भी है...

फरि हल्दी पहुँची बंदर के हाथ...

और बंदर ने क्या किया?

बम पे...

मल दी!

बंदर को दी हल्दी!

उसने अपने बम पे मल दी!

काम की चीज़ थी, काम ना आई,

बंदर के हाथ लगी, शामत आई!

बंदर को दी हल्दी!

उसने अपने बम पे मल दी!

हाथ में हल्दी, दमिग है खाली,

बंदर ने फरि वही हरकत कर डाली!

फ़ोन मलिया था दुनिया से जुड़ने,

भाई लगा कमेंट में सब से भड़िने!

इंटरनेट मलिया दुनिया जोड़ने,

चाचा लगे अफ़वाहें छोड़ने!

कैमरा मलिया यादें बनाने,

लोग लगे हादसे की रील बनाने!

माइक मल्ला था सच सुनाने,
भाई लगा पॉडकास्ट पे ज्ञान पेलने!
कुरसी मल्लि थी सेवा करने,
साहब लगे सलाम करवाने!
कल तक पैदल, आज है गाड़ी,
हॉर्न बजाए, अकड़ है भारी!
हीरा दिया था चमकाने को,
बंदर लगा उससे पीठ खुजाने को!

दे दो पैसा!
दे दो पावर!
दे दो उसको...
पूरा टावर!
चाबी दे दो!
गाड़ी दे दो!
अक्ल नहीं है?
फरि कांड देखो!

बंदर को दी हल्दी!

उसने अपने बम पे मल दी!
काम की चीज़ थी, काम ना आई,
बंदर के हाथ लगी, शामत आई!

बंदर को दी हल्दी!

उसने अपने बम पे मल दी!
हाथ में हल्दी, दमिग है खाली,
अच्छी-खासी चीज़ की वाट लगा डाली!

डगिरी मली, पर अक्ल ना आई,
पढ़-लखिकर भी समझ ना आई!
नौकरी मली, बना अधिकारी,
पहले दनि से रश्चित की तैयारी!
धर्म मलि था खुद को जानने,
लोग लगे एक-दूजे को बाँटने!
जात मली थी पहचान बताने,
उसी के नाम पे लगे लड़ाने!
वज्जिज्ञान ने सखाया, सवाल उठाओ,
बंदर बोला, “अफ़वाह फैलाओ!”
एआई आया काम आसान बनाने,
भाई लगा नकली बाबा बनाने!
बोलने की आज़ादी मली,
जुबान मगर गाली पे अड़ी!

साधन अच्छा!
अच्छा!
नीयत...
टट्टी!
टेक्नोलॉजी नई!
सोच है घटिया!
ताक़त बड़ी!
बुद्धि छोटी!
फरि वही कहानी...
फरि वही गलती!
हल्दी आई...

बंदर आया...
सबने बोला...
"अब क्या होगा?"
बंदर मुस्कुराया...

बंदर को दी हल्दी!

उसने अपने बम पे मल दी!

बंदर को दी हल्दी!

बम पे मल दी!

बंदर को दी हल्दी!

बम पे मल दी!

क्या दिया?

हल्दी!

कसिको दिया?

बंदर को!

उसने क्या किया?

बम पे मल दी!

थोड़ा सीखा, ज़्यादा सखाया,
आधे ज्ञान पे खूब इतराया!
कानून बना था इंसान दलाने,
लोग लगे उसमें छेद निकालने!
वोट मिला था सोच-समझकर देने,
बंदर लगा जात के नारे लगाने!
सड़क बनी तो कचरा डाला,
नल खुला तो पानी बहा डाला!

देश चाहिए सगिापुर जैसा,
काम करेंगे?
“भाई, तू कर ले!”
ससिटम चाहिए एकदम क्लीन,
अपनी सेटगि?
“वो अलग सीन!”
दूसरा करे तो भ्रष्टाचार,
खुद करे तो?
“जुगाड़ है यार!”
हर कोई बोले दुनयिा गंदी,
आईना देखा?
बत्ती बंद थी!

गड़बड़ हल्दी में नहीं थी...
गड़बड़ बंदर में थी।
फोन खराब नहीं था।
इंटरनेट खराब नहीं था।
पैसा खराब नहीं था।
ताक़त खराब नहीं थी।
आज़ादी खराब नहीं थी।
टेक्नोलॉजी खराब नहीं थी।
बस...
जसिके हाथ में दी...
वो बंदर नकिला।

बंदर को दी हल्दी!

उसने अपने बम पे मल दी!
ताक़त मली तो अकड़ दखा दी,
ज़मिंदारी सारी भुला दी!

बंदर को दी हल्दी!

उसने अपने बम पे मल दी!
नई टेक्नोलॉजी!
पुरानी स्ट्रुपडिटि!
नई सेचुरी!
वही मेटैलटि!
बंदर को दी?

हल्दी!
हल्दी का क्या कयिा?
मल दी!
कहाँ पे?
बम पे!!!

बंदर को दी हल्दी!

उसने...
अपने...
बम पे...
मल दी!!!

हल्दी बुरी नहीं थी...
हल्दी तो काम की थी।
बस बंदर के हाथ लग गई।
और बंदर?
बंदर पूरा ढक्कन था!

03

सब ज्ञानी हैं / 5:00

अरे भाई...

आजकल ज्ञान की कोई कमी नहीं है।

हर गली में एक्सपर्ट है...

हर घर में सलाहकार है...

हर फ़ोन में यूनिवर्सिटी है...

और हर आदमी...

प्रोफ़ेसर है!

डिग्री?

उसकी क्या ज़रूरत है, भाई!

सब ज्ञानी हैं!

सब ज्ञानी हैं!

बना पढ़े सब वजिज्ञानी हैं!

सब ज्ञानी हैं!

सब ज्ञानी हैं!

बाते बड़ी, अक्ल है छोटी,

हर गली में ज्ञानी हैं!

पूछो, "सबूत कहाँ है?"

व्हाट्सऐप पे आया है!

चाय की दुकान पे बैठे चार,

देश चलाने को सब तैयार!

क्रिकेट हो या शेयर बाज़ार,

हर चाचा का ज्ञान तैयार!
दो वीडियो देखे, चार रील घुमाई,
फरि दुनिया को साइंस समझाई!
कल तक जसै फ़ोन ना आया,
आज वही एआई समझाने आया!
डॉक्टर से बोले, “तुम क्या जानो?”
गूगल पे पढ़ा है, मेरी मानो!
इंजीनियर को पुल बनाना सखाए,
खुद से घर का नल ना बन पाए!
कतिब कभी खोली नहीं,
पर सलाह किसी से रोकी नहीं!

पूछो, “कहाँ से सीखा?”
व्हाट्सऐप पे आया!
पूछो, “सबूत है क्या?”
भाई ने बताया!
पूछो, “सच है पक्का?”
मुझे मत सखाना!
अरे भाई...
तू जानता नहीं...
मैं कौन हूँ!

सब ज्ञानी है!

सब ज्ञानी है!

बना पढ़े सब वजिज्ञानी है!

सब ज्ञानी है!

सब ज्ञानी है!

बाते बड़ी, अक्ल है छोटी,
हर गली में ज्ञानी है!
पूछो, “सबूत कहाँ है?”
व्हाट्सऐप पे आया है!

राजनीतिपे लंबा भाषण,
घर में खुद का नहीं अनुशासन!
धर्म पे बोले सुबह से शाम,
खुद से ना हो एक अच्छा काम!
अर्थव्यवस्था का पूरा ज्ञान,
जेबे खाली, मगर ऊँची शान!
जमि कभी गए नहीं ज़िंदगी में,
डाइट बताएँ पूरी दुनिया में!
शादी का एक्सपर्ट बना कुँवारा,
रश्मिता आया तो भागा बेचारा!
बज़िनेस का गुरु, खुद बेरोज़गार,
बोले, “मेरे पास करोड़ों के वचार!”
खुद की गलती कभी ना माने,
दूसरों को जीना रोज़ सखाए!

कसिको ज्ञान चाहिए?
कसी को नहीं!
कसिके पास ज्ञान है?
सबके पास!
कसिने पढ़ा?

कसी ने नहीं!
कसिने समझा?
भगवान जाने!

सब ज्ञानी है!

सब ज्ञानी है!

बना पढ़े सब वज्ज्ञानी है!

सब ज्ञानी है!

सब ज्ञानी है!

बाते बड़ी, अक्ल है छोटी,
हर गली में ज्ञानी है!
पूछो, “सबूत कहाँ है?”
व्हाट्सऐप पे आया है!

हर वषिय का एक्सपर्ट है,
हर बात पे उसका लेक्चर है!
कल तक था जो अनजान,
आज बाँटे मुफ्त का ज्ञान!
अपनी राय को सच बताता,
सच दिखाओ तो मुँह फुलाता!
हर सवाल का जवाब तैयार,
ग़लत नकिले तो दुनिया बेकार!
दूसरे की सुनना मंजूर नहीं,
खुद की गलती कबूल नहीं!
जो ना जाने, सबसे बोले,
जो कुछ जाने, कम ही बोले!

ज्जान बाँटने वालों की भरमार,
समझदारों का पड़ा अकाल!

एक सवाल है...

अगर सब इतने ज्जानी है...

तो फरि...

इतनी बेवकूफ़ियाँ कौन कर रहा है?

शायद...

हम ही।

सब ज्जानी है!

सब ज्जानी है!

बना पड़े सब वज्जानी है!

सब ज्जानी है!

सब ज्जानी है!

बाते बड़ी, अक्ल है छोटी,

हर गली में ज्जानी है!

कौन ज्जानी?

मैं ज्जानी!

कौन समझदार?

मैं समझदार!

कौन है ग़लत?

बाकी संसार!

और तू?

मैं तो महान!

सब ज्जानी है!

सब ज़्जानी है!

ज़्जान की दुकाने पुरानी हैं!
बोलने वाले लाखों हैं,
सुनने वालों की कमी है!

आज का ज़्जान यहीं समाप्त होता है।
कल फरि मल्लिगे...
एक नए वशिषज्ज के साथ।
वषिय कोई भी हो...
ज़्जान पूरा मल्लिगा!
और हाँ...
इस गाने में कोई गलती लगे...
तो कमेंट में ज़रूर बताना।
आख़रि...
आप भी तो ज़्जानी है!

04

रील बना ले / 3:40

एक मनिट...

एक मनिट...

रुको!

अभी मत खाना!

पहले फ़ोटो!

अरे, मुस्कुरा ना!

रील बना ले!

रील बना ले!

ज़िंदगी गई तेल लेने,

रील बना ले!

रील बना ले!

रील बना ले!

जो भी दखि कैमरे में,

वायरल करा ले!

लाइक! शेयर!

कमेंट! व्यू!

असली दुनिया?

कौन है तू?

खाना आया, ठंडा पड़ा,

फ़ोटो खींचने में घंटा लगा!

कॉफी आई, झाग था प्यारा,

पाँच मिनट में पोज़ दोबारा!
जमि में पहुँचा, वज़न उठाया,
पहले कैमरा सेट करवाया!
दस सेकंड की कसरत की,
तीस मिनट की रील बनाई!
सुबह-सुबह जो योगा करता,
कैमरा बंद तो बसितर पकड़ता!
घूमने नकिला पहाड़ों में,
नज़र गड़ी है मोबाइल में!

खाना खाया?
पहले फ़ोटो!
घूमने आया?
पहले फ़ोटो!
ज़िंदगी जी?
अभी नहीं!
कैमरा ऑन है, भाई!

रील बना ले!

रील बना ले!

ज़िंदगी गई तेल लेने,

रील बना ले!

रील बना ले!

रील बना ले!

जो भी दखि कैमरे में,
वायरल करा ले!

कल तक जसिके दस थे फ़ॉलोअर,
आज बना वो लाइफ़ का टीचर!
खुद का कमरा साफ़ नहीं,
दुनिया को दे मोटिवेशन!
करिए की गाड़ी, उधार के कपड़े,
कैप्शन में लखि, “अपने सपने!”
फ़िल्टर लगाया, चेहरा चमकाया,
आईने ने भी पहचान ना पाया!
ब्रेकअप हुआ, दर्द दिखाया,
पाँच ब्रांड का लकि लगाया!
रोते-रोते कैमरा देखा,
एंगल बदला, आँसू पोछा!

एक सवाल...

अगर इतना दुख है...

तो कैमरा कौन पकड़ रहा है?

रील बना ले!

रील बना ले!

ज़िंदगी गई तेल लेने,

रील बना ले!

रील बना ले!

रील बना ले!

जो भी दखि कैमरे में,

वायरल करा ले!

शादी में दूल्हा खड़ा अकेला,

दुल्हन बना रही ट्रेडिंग रील!
बच्चा रोए, माँ मुस्काए,
कैमरे में सब प्यार दिखाए!
दोस्ती भी अब कंटेंट बनी,
हर मुलाकात में रील बनी!
दादी ने पूछा, “कैसे हो बेटा?”
बोला, “रुको, ये मोमेंट है बढ़िया!”
बर्थडे आया, केक सजाया,
पहले लाइव, फरि मोम बुझाया!
हर पल को बस पोस्ट बनाया,
जीना छोड़ा, दिखाना अपनाया!

एक दनि...
फ़ोन की बैटरी ख़त्म हो गई।
ना कैमरा...
ना फ़िल्टर...
ना लाइक...
ना कमेंट...
पहली बार...
उसने सामने देखा।
और बोला...
“भाई... वाई-फ़ाई कहाँ है?”

रील बना ले!

रील बना ले!

ज़िंदगी गई तेल लेने,

रील बना ले!

रील बना ले!

रील बना ले!

जो भी दखि कैमरे में,

वायरल करा ले!

फ़ोटो!

फ़िल्टर!

कैप्शन!

शेयर!

लाइक!

कमेंट!

फ़ॉलो!

व्यू!

असली ज़िंदगी?

अभी नहीं!

पहले रील बना ले!

अरे भाई...

गाना ख़त्म हो गया।

लेकनि...

रील बनी क्या?

05

सेटगि है भाई / 3:52

अरे भाई...

लाइन में क्यों खड़ा है?

फॉर्म क्यों भर रहा है?

नयिम क्यों पढ़ रहा है?

तू नया है क्या?

यहाँ काम नयिम से नहीं...

पहचान से होता है!

सेटगि है भाई!

सेटगि है भाई!

काम हो जाएगा,

सेटगि है भाई!

लाइन हो लंबी,

या फाइल अटकी,

टेशन क्यों लेता?

सेटगि है भाई!

सेटगि! सेटगि!

सेटगि है भाई!

नयिम की बात?

छोड़ ना भाई!

दफ्तर में पहुँचा, लंबी कतार,

बोला, "अंदर बैठा अपना यार!"

फॉर्म अधूरा, कागज़ भी आधे,
फ़ोन घुमाते ही खुल गए रास्ते!
बाबू ने पूछा, "कसिसे मलिना?"
बोला, "साहब से है सीधा रश्ता!"
सुबह से जनता धक्के खाए,
ये साहब पीछे से अंदर जाएँ!
कल तक ससिस्टम को देता था गाली,
आज उसी से अपनी फ़ाइल नकिलवा ली!
कल तक बाबू आँख दखाए,
आज वही चाय पलाए!

अरे, ये कौन आ गया?
सेटगि वाला भाई!
कसि-कसि को जानता है?
सबको, भाई... सबको!

मंंत्री मेरा मामा है,
अफ़सर मेरा यार!
पूछो दोनों का नंबर,
बोले, "फ़ोन है ख़राब!"
थाने में पहचान है,
दफ़्तर में भी नाम!
पूछो, "कौन है अंदर?"
बोले, "अभी है कुछ काम!"
हर जगह की चाबी,
हर ताले का इलाज!

लेकनि खुद की फ़ाइल अटकी,
पछिले तीन महीने से आज!
भाई... अपनी फ़ाइल तो नकिलवा ले!
अरे... वो अलग मामला है!

कसिको जानता?
सबको जानता!
काम कैसे होगा?
मैं करवाता!
नयिम क्या कहते?
कौन पढ़ता है?

सेटगि है भाई!

सेटगि है भाई!

सेटगि है भाई!

काम हो जाएगा,

सेटगि है भाई!

लाइन हो लंबी,
या फ़ाइल अटकी,
टेशन क्यों लेता?

सेटगि है भाई!

सेटगि! सेटगि!

सेटगि है भाई!

नौकरी नकिली, इंटरव्यू हुआ,
चयन तो पहले ही तय हुआ!
डिग्री लेकर आया होनहार,

पूछा, "कसिकी है सफ़िरशि यार?"
ठेका नकिला, बोली लगी,
जीत उसी की पहले से पक्की!
काबलि खड़ा रहा बाहर,
पहचान वाला सीधे अंदर!
स्कूल में दाख़िला, अस्पताल में बेड,
हर जगह चाहिए किसी का रेफ़रेस!
जसिका कोई नहीं, वो लाइन में खड़ा,
जसिका चाचा अंदर, वो सीधा चढ़ा!

अरे भाई, टेशन क्यों लेता है?
अपना आदमी है अंदर!
कौन?
अरे... नाम नहीं ले सकता!
मेहनत?
बाद में!
काबलियित?
बाद में!
पहचान?
सबसे पहले!
और नियम?
अपने लिए नहीं!

सेटगि है भाई!

सेटगि है भाई!

काम हो जाएगा,

सेटगि है भाई!

लाइन हो लंबी,
या फ़ाइल अटकी,
टेशन क्यों लेता?

सेटगि है भाई!

लाइसेंस चाहिए, पहचान लगाओ,
काम अटका तो फ़ोन घुमाओ!
परमिट चाहिए, चक्कर बचाओ,
अंदर वाले को चाय पिलाओ!
नयिम तोड़ो, फरि ज़्जान सुनाओ,
पकड़े जाओ तो फ़ोन मलाओ!
कल तक बोले, देश सुधारो,
आज कहे, मेरा काम नक़िलो!
ससिट्म बदलना सबको प्यारा,
बस अपना रास्ता रहे न्यारा!
ईमानदारी का भाषण भारी,
अपनी सेटगि सबसे प्यारी!

मंत्त्री मेरा मामा है!
अफ़सर मेरा यार!
तो फरि काम क्यों अटका?
अभी सब है बाहर!
फ़ोन लगा दे!
बैटरी है डाउन!
नंबर बता दे!

नेटवर्क नहीं है, भाई!
अच्छा... मंत्री का नाम तो बता!
अरे भाई...
इतना शक क्यों करता है?

एक सवाल पूछूँ?
अगर सबकी सेटिंग है...
तो नियम किसके लिए है?
उनके लिए...
जनिकी सेटिंग नहीं है।
और फिर हम कहते हैं...
सिस्टम खराब है!

सेटिंग है भाई!

सेटिंग है भाई!

काम हो जाएगा,
सेटिंग है भाई!
मेहनत गई छुट्टी पे,
नियम गए सोने!
पहचान वाले आगे,
बाकी लगे रोने!

सेटिंग है भाई!

सेटिंग है भाई!

काम कैसे होगा?
सेटिंग से!
नियम क्या होगा?

देखेंगे!

कसिकी चलेगी?

अपनी चलेगी!

सेटगि है भाई!!!

और हाँ...

अगर ये गाना पसंद आया...

तो लाइक करना।

शेयर करना।

और अगर पसंद नहीं आया...

कोई बात नहीं।

अपनी सेटगि है भाई!

06

फॉरवर्ड कर दे / 4:05

टगि!

अरे भाई...

एक ज़रूरी मैसेज आया है!

लखा है...

"ये ख़बर सौ प्रतशित सच है!"

और नीचे लखा है...

"सबको भेजो!"

फॉरवर्ड कर दे!

फॉरवर्ड कर दे!

सच है या झूठ?

अरे छोड़, कर दे!

फॉरवर्ड कर दे!

फॉरवर्ड कर दे!

बना पढ़े, बना समझो,

सबको भेज दे!

भेज दे!

भेज दे!

सबको भेज दे!

सबूत है?

कसिको चाहिए?

सुबह-सुबह फ़ोन बजा,

चाचा का मैसेज फरि आ गया!
लखा था, "आज से सूरज ठंडा!"
नीचे लखा, "ये राज़ है गहरा!"
पढ़ते ही चाचा घबरा गए,
पचास लोगों को समझा गए!
बुआ ने भेजा मामा को,
मामा ने भेजा नाना को!
नाना ने भेजा पूरे गाँव,
शाम तक मच गया हल्ला-गुल्ला!
जसिने पूछा, "सच है क्या?"
चाचा बोले, "शक है क्या?"

कसिने भेजा?
चाचा ने!
चाचा को?
मामा ने!
मामा को?
पता नहीं!
फरि क्या करना?

फॉरवर्ड कर दे!

फॉरवर्ड कर दे!

फॉरवर्ड कर दे!

सच है या झूठ?
अरे छोड़, कर दे!

फॉरवर्ड कर दे!

फॉरवर्ड कर दे!

बनिा पढ़े, बनिा समझो,
सबको भेज दे!
भेज दे!
भेज दे!
सबको भेज दे!

फोटो पुरानी, ख़बर है नई,
कहते हैं, "देखो, अभी की है भाई!"
वीडियो काटा, आवाज़ बदली,
झूठ की नकिली नई शक्ल असली!
ऊपर लिखा, "मीडिया चुप है!"
नीचे लिखा, "ये गुप्त ख़बर है!"
लाल नशान और बड़े-बड़े अक्षर,
चाचा बोले, "पढ़ ले ज़रा ध्यान से!"
एक ने बोला, "मैंने भी देखा!"
दूजे ने बोला, "मैंने भी भेजा!"
तीसरे ने बोला, "पक्का है भाई!"
चौथे ने सौ लोगों को सुनाई!

कसिने जाँचा?
कसीने नहीं!
कसिने माना?
सबने सही!
कसिने भेजा?
सबने भेजा!

सच कहाँ है?
किसी को नहीं पता...

फॉरवर्ड कर दे!

फॉरवर्ड कर दे!

सच है या झूठ?
अरे छोड़, कर दे!

फॉरवर्ड कर दे!

फॉरवर्ड कर दे!

बनिा पढ़े, बनिा समझो,
सबको भेज दे!

घर में बैठे चाचा ज्ञानी,
हर मैसेज में नई कहानी!
कभी दवा, कभी बीमारी,
कभी दुनिया ख़त्म होने की बारी!
कभी ख़ज़ाना, कभी ख़तरा,
हर अफ़वाह का नया तमाशा!
कहते, "ये तो गुप्त ख़बर है!"
पूछो, "कहाँ से?" तो जवाब नदारद!
सवाल करो तो गुस्सा आए,
"तुम जैसे लोग देश डुबाएँ!"
सच दिखाओ तो फ़ोन हटाएँ,
फरि नया मैसेज पढ़ने लग जाएँ!

लेकनि...
एक दनि...

कुछ अजीब हुआ।

टगि!

एक मैसेज आया।

वही मैसेज...

जो चाचा ने...

तीन दनि पहले...

खुद बनाया था।

चाचा ने पढ़ा...

आँखें फटी रह गईं...

और बोले...

"अरे बाप रे..."

"ये तो बहुत बड़ी ख़बर है!"

फ़ॉरवर्ड कर दे!

फ़ॉरवर्ड कर दे!

सच है या झूठ?

अरे छोड़, कर दे!

फ़ॉरवर्ड कर दे!

फ़ॉरवर्ड कर दे!

बनिया पढ़े, बनिया समझो,

सबको भेज दे!

चाचा को!

मामा को!

बुआ को!

नाना को!

गाँव को!

शहर को!
सबको!
सबको!
कसिने लखा?
पता नहीं!
कसिने पढ़ा?
पता नहीं!
कसिने माना?
सबने माना!
कसिने फैलाया?
हमने फैलाया!
फॉरवर्ड कर दे!
फॉरवर्ड कर दे!
सच है या झूठ?
कौन जाँचेगा?
फॉरवर्ड कर दे!!!

टगि!
अरे भाई...
एक नया मैसेज आया है।
लखा है...
"अफ़वाहों से सावधान रहें।"
और नीचे?
"इसे कम से कम पचास लोगों को भेजें!"

07 ,

डगिरी है, दमिग़ नहीं / 3:54

अरे भाई...

दीवार पे डगिरियाँ देखी?

एक नहीं...

दो नहीं...

पूरी पाँच!

और अक्ल?

वो शायद फ़रेम में नहीं आई!

डगिरी है!

दमिग़ नहीं!

बाते बड़ी,

पर ज़्ज़ान नहीं!

डगिरी है!

दमिग़ नहीं!

नाम के आगे चार उपाधि,

पर सवाल का जवाब नहीं!

डगिरी है!

दमिग़ नहीं!

दीवार पे डगिरी, मेज़ पे कतिब,

पूछो कोई सवाल, तो गोल जवाब!

पाँच साल पढ़े, दस साल पढ़ाए,

फरि भी छोटी बात समझ ना पाए!

नाम के आगे लंबी उपाधि,
हर बात में झलके अकड़ नवाबी!
कहते, "मेरे पास अनुभव भारी!"
पर छोटी मुश्किल पड़े तो लाचारी!
कागज़ पे नंबर, सीने में शान,
सवाल उठाओ तो जाए जान!
सीखने से ज़्यादा दिखावे का शौक,
डगिरी चमकाए, समझ का अकाल!

कतिनी डगिरी?
पाँच-पाँच!
कतिना ज्ञान?
भगवान जाने!
सवाल पूछे?
मत पूछो!
क्यों भाई?
इज़्ज़त जाएगी!

डगिरी है!

दमिग नहीं!

बाते बड़ी,
पर ज्ञान नहीं!

डगिरी है!

दमिग नहीं!

नाम के आगे चार उपाधि,
पर सवाल का जवाब नहीं!

मीटिंग में बोले, "स्ट्रैटेजी बनाओ!"
खुद से पूछो तो रास्ता बताओ!
स्लाइड पे चार्ट, रपिपोर्ट हज़ार,
फ़ैसला लेने में बीते ख़व़ार!
हर बात में बोले, "डेटा दिखाओ!"
डेटा जो आए तो नज़र चुराओ!
टीम को बोले, "सोचो नया!"
खुद की सोच वही पुराना ढ़रा!
क़ुर्सी बड़ी, पद भी भारी,
ज़म्मेदारी आए तो छुट्टी जारी!
कहते, "मैं हूँ लीडर महान!"
टीम करे मेहनत, ये ले सम्मान!

डग़िरी है!

दमिग़ नहीं!

बाते बड़ी,
पर ज़्ज़ान नहीं!

डग़िरी है!

दमिग़ नहीं!

नाम के आगे चार उपाधि,
पर सवाल का जवाब नहीं!

सर्टिफ़िकेट की लगी कतार,
हर महीने नया अवतार!
कोर्स ख़रीदा, बैज लगाया,
सीखा कतिना? कुछ ना बताया!

प्रोफ़ाइल पे लखा "वशिषज्ज",
काम पड़ा तो हो गए गायब!
कतिब पढ़ी, पर समझ ना आई,
फरि भी दुनिया को सीख सखाई!
डगिरी का मतलब ज्ञान नहीं,
अकड़ का मतलब शान नहीं!
जो सच में सीखे, सवाल उठाए,
जो खुद को ज्ञानी माने, चुप कराए!

एक बात समझो...
डगिरी बुरी नहीं है।
पढ़ाई बुरी नहीं है।
कतिबे बुरी नहीं हैं।
लेकनि...
कागज़ पे लखा नाम...
दमिग में समझ भी लखि दे...
ये ज़रूरी नहीं।
क्योंकि...
असली शकिषा...
सवाल पूछना भी सखाती है।

डगिरी है!

दमिग नहीं!

बाते बड़ी,
पर ज्ञान नहीं!

डगिरी है!

दमिग नहीं!

नाम के आगे चार उपाधि,
पर सवाल का जवाब नहीं!

डिग्री कतिनी?

पूरी पाँच!

अक्ल कतिनी?

अभी तलाश!

सीखा क्या?

पूछो मत!

समझा क्या?

वो भी मत!

डिग्री है!

दमिग नहीं!

फ़रेम चमके,

पर ज्ञान नहीं!

डिग्री है!

दमिग नहीं!

और हाँ...

डिग्री ज़रूर लेना।

पढ़ना भी।

सीखना भी।

बस...

डिग्री के साथ...

थोड़ी अक्ल भी ले आना।

08 ,

भक्त भी, हेटर भी / 3:58

अरे भाई...

तू कसिकी साइड है?

मेरी साइड?

तो ठीक है!

और नहीं है?

तो तू ग़लत है!

भक्त भी!

हेटर भी!

हर कसिकी के अंदर ट्रोल बैठा है!

भक्त भी!

हेटर भी!

अपना सही, बाकी सब झूठा है!

अपना हीरो!

सबसे महान!

दूसरे का हीरो?

पूरा बेईमान!

भक्त भी!

हेटर भी!

एक ही सक्कि के दो चेहरे!

अपना बोले तो ज़्जान की बात,

दूसरा बोले तो बकवास!

अपना करे तो बड़ी उपलब्धि,
दूसरा करे तो भारी ग़लती!
अपना हारे तो साज़िशि भारी,
दूसरा हारे तो उसकी बारी!
अपना झूठ भी सच कहलाए,
दूसरे का सच भी झूठ बताए!
कल तक जसिकी करता बुराई,
आज उसी की कसम है खाई!
नाम बदलो, झंडा बदलो,
सोच वही है, रंग बदलो!

सवाल कयिा?
गद्दार है!
तारीफ़ की?
अपना यार है!
सबूत माँगा?
हेटर है!
आँखें मूँदी?
सपोर्टर है!
भक्त भी! हेटर भी!

भक्त भी!

हेटर भी!

हर किसी के अंदर ट्रोल बैठा है!

भक्त भी!

हेटर भी!

अपना सही, बाकी सब झूठा है!

अपना हीरो!

सबसे महान!

दूसरे का हीरो?

पूरा बेईमान!

कल तक बोले, "सोचो खुद से!"

आज कहे, "बस मानो मुझसे!"

फ़ोन पे लड़ाई, रात गुज़ारी,

सुबह उठे तो फरि तैयारी!

कमेंट में आग, स्टेटस में जंग,

हर दिन बदले दुश्मन का रंग!

जसिको देखा, लेबल लगाया,

बनि सुने फैसला सुनाया!

एक ही बात के दो पैमाने,

अपने लिए अलग बहाने!

जसिकी पूजा, उसकी जय-जय,

बाकी सबको सुनाए भय-भय!

अपना करे?

सब माफ़!

दूसरा करे?

इंसाफ़!

अपना बोले?

सच्चाई!

दूसरा बोले?

बकवास भाई!

भक्त भी!

हेटर भी!

हर किसी के अंदर ट्रोल बैठा है!

भक्त भी!

हेटर भी!

अपना सही, बाकी सब झूठा है!

सुबह से शाम बहस पे बहस,
नतीजा ज़ीरो, बढ़ता गुस्सा!
लाइक के बदले वफ़ादारी,
कमेंट में चलती पहरेदारी!
अपना नेता, अपना स्टार,
उसके लिए सब कुछ स्वीकार!
गलती देखे तो आँखें फेरे,
दूसरे की तो खाल उधेड़े!
खुद को कहते स्वतंत्र वचिर,
पर राय मलें तो ही स्वीकार!
सवाल उठे तो शोर मचाएँ,
जवाब ना हो तो नाम धराएँ!

एक सवाल है...

अगर तुम किसी को...

बना सवाल किए सही मानते हो...

और किसी दूसरे को...

बना सुने ग़लत...

तो तुम सोच रहे हो?

या बस...

किसी की टीम में खेल रहे हो?

सोच अपनी है...

या उधार की?

भक्त भी!

हेटर भी!

हर किसी के अंदर ट्रोल बैठा है!

भक्त भी!

हेटर भी!

अपना सही, बाकी सब झूठा है!

अपना सही?

हमेशा!

दूसरा ग़लत?

हमेशा!

सबूत चाहिए?

कसिको?

सोचना पड़ेगा?

क्यों भाई?

तो फरिदमिग कसिलिए है?

और हाँ...

अगर ये गाना पसंद आया...

तो तुम समझदार हो।

और अगर पसंद नहीं आया...

तो तुम हेटर हो!

09

सब चंगा सी / 5:13

सब ठीक है...

सब बढ़िया है...

सब कुछ नयित्रण में है...

तो फरि...

ये धुआँ कहाँ से आ रहा है?

सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

आँखें बंद तो सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

सवाल ना पूछो,

सब चंगा सी!

वाह! वाह!

क्या बात है!

छत से टपके पानी की धार,

मालकि बोले, "मौसम शानदार!"

दीवारों में दरारें आई,

बोले, "हवा आने की जगह बनाई!"

सड़क पे गड्ढे, धूल का गुबार,

बोले, "मुफ्त में मलिता ऑफ़-रोड प्यार!"

बत्ती गई तो मोम जलाया,

बोले, "रोमांस का मौसम आया!"
पानी आया पीला-पीला,
बोले, "हल्दी वाला पानी पी ले!"
हर मुश्किल का नया बहाना,
सच को हँसकर दूर भगाना!

छत टपक रही?
बारिश का मज़ा!
बत्ती गई?
तारों का नज़ारा!
सड़क टूटी?
एडवेचर है!
सच बताऊँ?
रहने दे यार!

सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

आँखें बंद तो सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

सवाल ना पूछो,

सब चंगा सी!

जेब है खाली, खर्चे हज़ार,
बोले, "पैसे से मलिता नहीं प्यार!"
नौकरी गई तो बोले हँसकर,
"अब तो अपना बॉस हूँ घर पर!"

महँगाई आई, थाली हुई आधी,
बोले, "डाइटिंग सेहत की साथी!"
लाइन में खड़े थे सुबह से शाम,
बोले, "धैर्य का हो रहा अभ्यास!"
स्कूल में टीचर, आधे दनि गायब,
बोले, "बच्चे बनेंगे खुद काबलि!"
दवा ना मली, पर्ची मली,
बोले, "देखो, कतिनी तरक्की!"

सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

आँखें बंद तो सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

सवाल ना पूछो,

सब चंगा सी!

आँकड़े चमके, चेहरे उतरे,
कागज़ पे सब सपने पूरे!
मंच पे भाषण, तालियाँ भारी,
पीछे खड़ी परेशान सवारी!
हर सवाल का एक जवाब,
"सब बढ़िया है, रखो हिसाब!"
जो भी पूछे, "क्यों है ऐसा?"
बोले, "तू सोचता बहुत है पैसा!"
ख़बरो में बस जश्न मनाया,

मुश्किल का नाम ही मटिया!
सच को ढककर पर्दा डाला,
झूठ को फूलों से सजाया!

एक सवाल है...
अगर सब चंगा है...
तो हर सवाल से डर क्यों लगता है?
कहीं...
चंगा सिर्फ नारा तो नहीं?

हर बात में बुराई ढूँढ़ना...
समझदारी नहीं है।
लेकिन...
हर बुराई को अच्छाई बताना...
वो भी समझदारी नहीं।
उम्मीद अच्छी चीज़ है।
मगर...
आँखें बंद करने से...
मुश्किलें ग़ायब नहीं होती।

सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

आँखें बंद तो सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

सवाल ना पूछो,

सब चंगा सी!

सब ठीक है?
बल्कि ठीक!
कुछ टूटा है?
कुछ भी नहीं!
धुआँ क्यों है?
धूप जली है!
आग लगी है?
रोशनी है!
और ये पानी?
छत से आ रहा है!

सब चंगा सी!

सब चंगा सी!

आँखें बंद तो सब चंगा सी!
सब कुछ ठीक है...
कृपया घबराएँ नहीं...
अरे! छत गरि गई!
घबराने की कोई बात नहीं...
अब आसमान साफ़ दिखाई देगा।

10

घंटा ज्ञान / 5:15

देवियों और सज्जनों...
स्वागत है आपका...
दुनिया के सबसे बड़े...
ज्ञान सम्मेलन में!
जहाँ हर आदमी वशिष्ठज्ञ है...
और किसी को कुछ करना नहीं है!

घंटा ज्ञान!

घंटा ज्ञान!

बाते ऊँची, काम तमाम!

घंटा ज्ञान!

घंटा ज्ञान!

मुँह में भाषण, हाथ खाली,
सबके अपने बड़े अरमान!
ज्ञान! ज्ञान!

घंटा ज्ञान!

सुबह उठे तो ज्ञान की बारिश,
हर किसी को देने की खूवाहिश!
चाय की चुस्की, लंबा भाषण,
दूसरों को बाँटे अनुशासन!
खुद से उठता नहीं है झाड़ू,
दुनिया साफ़ करने का जादू!

हर समस्या का हल बताता,
करने को बोलो, मुँह बनाता!
मंच मिला तो भाषण भारी,
ज़मिंदारी आई तो बीमारी!
दूसरों की गलती गनिवाए,
अपनी बारी चुप हो जाए!

सलाह चाहिए?
मुफ़्त मलिगी!
मदद चाहिए?
कल मलिगी!
भाषण चाहिए?
अभी मलिगा!
काम करेगा?
देखेंगे भाई!

घंटा ज्ञान!

घंटा ज्ञान!

बाते ऊँची, काम तमाम!

घंटा ज्ञान!

घंटा ज्ञान!

मुँह में भाषण, हाथ खाली,
सबके अपने बड़े अरमान!

घर में बैठा बड़ा सुधारक,
हर मुद्दे का स्वयं प्रचारक!
सड़क पे गड़ढा, लंबा लेख,

भरने को बोलो, बदल दे वषिय!
फ़ोटो खचिवाए पेड़ के साथ,
पानी देने को नहीं है हाथ!
स्वच्छता पर भाषण दे डाला,
खुद ने कचरा नीचे डाला!
समय की कीमत सबको बताए,
खुद हर मीटिंग देर से आए!
बोले, "देश को बदलना होगा!"
पूछो, "कैसे?" तो चुप हो जाएगा!

कतिना ज्ञान?
टनों में!
कतिना काम?
कणों में!
कतिनी बातें?
हज़ारों!
कतिने नतीजे?
गनि लो यारों!
कहाँ हैं नतीजे?
अभी आ रहे हैं...

घंटा ज्ञान!

घंटा ज्ञान!

बातें ऊँची, काम तमाम!

घंटा ज्ञान!

घंटा ज्ञान!

मुँह में भाषण, हाथ खाली,
सबके अपने बड़े अरमान!

सपने बेचे, वादे बाँटे,
ज़मिंदारी आते ही भागे!
हर बहस में आगे-आगे,
मेहनत आए तो पीछे भागे!
दूसरों को रास्ता दिखाए,
खुद का पता भी भूल जाए!
ज्ञान का सागर, काम का सूखा,
भाषण देकर पेट है भूखा!
कहता, "मैं तो सच बोलूँगा!"
सच सुनते ही मुँह मोड़ेगा!
जो भी बोले, खुद को ज़ुजानी,
दुनिया सारी उसको नादानी!

एक सवाल है...
अगर बोलने से दुनिया बदलती...
तो अब तक...
दुनिया स्वर्ग बन चुकी होती।
लेकिन...
दुनिया बदलती है...
जब कोई उठकर...
कुछ करता है।
और हम?
हम अभी भी...

भाषण दे रहे हैं।

घंटा ज्ञान!

घंटा ज्ञान!

बाते ऊँची, काम तमाम!

घंटा ज्ञान!

घंटा ज्ञान!

मुँह मे भाषण, हाथ खाली,

सबके अपने बड़े अरमान!

सलाह?

तैयार!

भाषण?

दमदार!

मेहनत?

अगली बार!

नतीजा?

इंतज़ार!

घंटा ज्ञान!

घंटा ज्ञान!

बातों का पूरा हडिस्तान!

घंटा ज्ञान!

घंटा ज्ञान!

बाते ख़त्म?

अभी कहाँ!

काम शुरू?

कल से भाई!

तो दोस्तों...

आज के ज्ञान सम्मेलन का

यही समापन होता है।

अब सब अपने-अपने घर जाइए...

और...

कल से दुनिया बदलना शुरू कीजिए!

कल से ही क्यों?

परसों से करते हैं!